बड़ी बनाम छोटी योजनाएँ

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १६ | सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला | सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी | अंक ९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २६ अप्रैल, १९५२

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

हिन्दुस्तानी गवर्नर

१. हिन्दुस्तानी गवर्नरको चाहिये कि वह खुद पूरे संयमका पालन करे और अपने आसपास संयमका वातावरण खड़ा करे। अिसके बिना शराबबन्दीके बारेमें सोचा भी नहीं जा सकता।

२. अुसे अपनेमें और अपने आसपास हाथ-कताओी और हाथ-बुनाओीका वातावरण पैदा करना चाहिये, जो हिन्दुस्तानके करोड़ों गूंगोंके साथ अुसकी अेकताकी जाहिरा निशानी हो, 'मेहनत करके रोटी कमाने' की जरूरतका और संगठित हिंसाके खिलाफ — जिस पर आजका समाज टिका हुआ मालूम होता है — संगठित अहिंसाका जीता-जागता प्रतीक हो।

३. अगर गवर्नरको अच्छी तरह काम करना है, तो अुसे लोगोंकी निगाहोंसे बचे हुअे, फिर भी सबकी पहुंचके लायक, छोटेसे मकानमें रहना चाहिये। ब्रिटिश गवर्नर स्वभावसे ब्रिटिश ताकतको दिखाता था। अुसके और अुसके लोगोंके लिअे सुरक्षित महल बनाया गया था — अैसा महल जिसमें वह और अुसके साम्राज्यको टिकाये रखनेवाले अुसके सेवक रह सकें। हिन्दुस्तानी गवर्नर राजा-नवाबों और दुनियाके राजदूतोंका स्वागत करनेके लिअे थोड़ी शान-शौकतवाली अिमारतें रख सकता है। गवर्नरके मेहमान बननेवाले लोगोंको अुसके व्यक्तित्व और अुसके आसपासके वातावरणसे "ओीवन अण्ड् दिस लास्ट" (सर्वोदय) — सबके साथ समान बरताव — की सच्ची शिक्षा मिलनी चाहिये। अुसके लिअे देशी या विदेशी महंगे फर्नीचरकी जरूरत नहीं। 'सादा जीवन और अूंचे विचार' अुसका आदर्श होना चाहिये। यह सिर्फ अुसके दरवाजेकी ही शोभा न बढ़ाये, बल्कि अुसके रोजके जीवनमें भी दिखाओी दे।

४. अुसके लिअे न तो किसी रूपमें छुआछूत हो सकती है और न जाति, धर्म या रंगका भेद। हिन्दुस्तानका नागरिक होनेके नाते अुसे सारी दुनियाका नागरिक होना चाहिये। हम पढ़ते हैं कि खलीफा अुमर अिसी तरह सादगीसे रहते थे, हालांकि अुनके कदमों पर लाखों-करोड़ोंकी दौलत लोटती रहती थी। अिसी तरह पुराने जमानेमें राजा जनक रहते थे। अिसी सादगीसे अीटनके स्वामी, जैसा कि मैंने अुन्हें देखा था, अपने भवनमें ब्रिटिश द्वीपोंके लार्ड और नवाबोंके लड़कोंके बीच रहा करते थे। तब क्या करोड़ों भूखोंके देश हिन्दुस्तानके गवर्नर अितनी सादगीसे नहीं रहेंगे?

५. वह जिस प्रान्तका गवर्नर होगा, अुसकी भाषा और हिन्दुस्तानी बोलेगा, जो हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा है और नागरी या अुर्दू लिपिमें लिखी जाती है। वह न तो संस्कृत शब्दोंसे भरी हुअी हिन्दी है और न फारसी शब्दोंसे लदी हुअी अुर्दू। हिन्दुस्तानी दरअसल वह भाषा है, जिसे विन्ध्याचलके अुत्तरमें करोड़ों लोग बोलते हैं।

हिन्दुस्तानी गवर्नरमें जो जो गुण होने चाहियें, अुनकी यह पूरी सूची नहीं है। यह तो सिर्फ मिसालके तौर पर दी गअी है।

कलकत्ता, १७-८-'४७ — मो० क० गांधी

(हरिजनसेवक, २४-८-'४७)

शराबबन्दीकी टीकाका जवाब

[नीचेका लेख राष्ट्रपिता महात्मा गांधीने १५ बरस पहले लिखा था। अुसमें सारे कांग्रेस मंत्रि-मंडलोंको अपने कर्तव्यके प्रति जाग्रत करते हुअे कहा गया था कि वे कांग्रेसके हाथमें सत्ता आते ही पूर्ण शराबबन्दी करनेकी अपनी प्रतिज्ञा पर अमल करना शुरू करें। वह प्रतिज्ञा आज भी पूरी नहीं हुअी है, हालांकि कांग्रेस अब भारतके स्वतंत्र विधानके मातहत सरकार बनाकर देशका शासन चला रही है।

अुस समय अिस सुधारके खिलाफ जो टीका की जाती थी, वही आज भी की जाती है। अुस टीकाका जवाब १५ बरस पहले जितना ताजा था, अुतना ही ताजा आज भी है। क्या योजना-कमीशन और राज्य-सरकारें हमारे देशमें आजादी लानेवाली अुस आवाजकी तरफ ध्यान देंगी?

१६-४-'५२ — म० देसाओी]

कहा जाता है कि पूर्ण शराबबन्दी अगर संभव भी हो, तो वह अेकदम कैसे की जा सकती है? 'अेकदम' से मेरा मतलब यह है कि यह घोषणा तुरन्त कर दी जाय कि १४ जुलाओी १९३७ से अर्थात् कांग्रेसके पहले मंत्रि-मंडलने जबसे अधिकार हाथमें लिये हैं, अुस दिनसे लेकर तीन सालके अन्दर-अन्दर शराब वगैरा मादक द्रव्योंकी पूर्ण बन्दी हो जायगी। मेरा तो खयाल है कि यह दो सालके अन्दर ही हो सकती है। किन्तु शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी कठिनाअियोंकी जानकारी न होनेके कारण मैंने तीन साल बताये हैं। अिस बन्दीके कारण सरकारी आयमें जो घाटा होगा, अुसे मैं जरा भी महत्त्व नहीं देता। प्रथम श्रेणीके राष्ट्रीय महत्त्वके प्रश्नके सम्बन्धमें अगर कांग्रेस कीमतका खयाल करेगी, तो शराबबन्दीमें सफलताकी आशा रखना अुसके लिअे व्यर्थ होगा।

याद रखनेकी बात है कि शराब और दूसरी नशीली चीजोंसे पैदा होनेवाली यह आय अेक अत्यन्त पातक अर्थात् गिरानेवाला कर है। सच्चा कर तो वह है, जो करदाताको आवश्यक सेवाके रूपमें दस गुना बदला चुका दे। किन्तु यह आबकारी आय क्या करती है? लोगोंको अपने नैतिक, मानसिक और शारीरिक पतन और भ्रष्टता पर कर देनेके लिअे मजबूर करती है। वह अुन लोगों पर अेक पत्थरकी तरह भारी बोझ-सा गिरता है, जो अुसे सहनेकी सबसे कम ताकत रखते हैं। और फिर यह आय अुन कारखानों और खेतों पर काम करनेवाले मजदूरोंसे होती है, जिनकी खास तौर पर प्रतिनिधि होनेका कांग्रेस दावा करती है।

आयका यह घाटा वास्तविक घाटा नहीं है। क्योंकि अगर यह कर हट जाय, तो शराबखोर यानी करदाताकी कमाने और खर्च करनेकी शक्ति भी बढ़ जायगी। अिसलिअे शराबबन्दीसे राष्ट्रको जो जबरदस्त फायदा होगा, अुसके अलावा आर्थिक लाभ भी काफी होगा।

शराबबन्दीको मैंने सबसे पहला स्थान अिसलिअे दिया है कि अिसका परिणाम भी तत्काल दिखाअी देगा। कांग्रेसने और खास कर बहनोंने अिसके लिअे अपना खून बहाया है। राष्ट्रकी प्रतिष्ठा अिस कार्यसे अेकदम अितनी बढ़ जायगी, जितनी मेरे खयालसे किसी भी अेक कार्यसे नहीं बढ़ सकती। और फिर बहुत मुमकिन है कि अिन छः प्रान्तोंका अनुकरण बाकी पांच प्रान्त भी करें। अुन मुसलमान मंत्रियोंको भी, जो कांग्रेसवादी नहीं हैं, हिन्दुस्तानसे शराबके अुठ जाने पर अधिक खुशी होगी, बजाय अिसके कि यहां शराबखोरी बनी रहे।

कहते हैं कि गैरकानूनी शराबकी भट्टियोंको रोकनेमें भारी खर्च होगा। पर अिस पुकारमें अगर मक्कारी नहीं है, तो विचारकी कमी तो जरूर है। हिन्दुस्तान अमेरिका थोड़े ही है। अमेरिकाका अुदाहरण प्रोत्साहन देनेके बजाय शायद हमारे मार्गमें रोड़े ही अटकाये। अमेरिकामें शराब पीना शरमकी बात नहीं है। वहां तो यह अेक तरहका फैशन है। बेशक, अुन अल्पसंख्यक लोगोंको धन्य है, जिन्होंने केवल अपने नैतिक बलसे शराबबन्दीके कानूनको मंजूर करवा लिया, फिर चाहे वह कितना ही अल्पायु क्यों न रहा हो। मैं अुस प्रयोगको असफल नहीं समझता। संभव है अिस अनुभवसे लाभ अुठाकर अमेरिका किसी दिन और भी अधिक अुत्साहसे अपने यहां शराबकी बन्दी करनेमें सफल हो जाय। मैं अिस सम्बन्धमें निराश नहीं हुआ हूं। यह भी संभव है कि अगर हिन्दुस्तानमें हम पहले कामयाब हो जायं, तो अमेरिकाका रास्ता और भी सरल हो जाय और वह जल्दी सफल हो। संसारके किसी भी देशमें शराबबन्दी अितनी आसान नहीं है, जितनी कि अिस देशमें है। क्योंकि यहां तो शराब पीनेवालोंकी संख्या बहुत थोड़ी है। शराबखोरी यहां नीच काम समझा जाता है। और मेरा तो खयाल है कि यहां करोड़ों लोग अैसे हैं, जिन्होंने शराबको कभी छुआ भी न होगा।

पर गैरकानूनी शराब बनानेके गुनाहको रोकनेके लिअे अन्य गुनाहोंको रोकने पर जो खर्च होता है, अुसकी अपेक्षा अधिक खर्चकी जरूरत ही क्यों होनी चाहिये? गैरकानूनी शराबके बनाने पर मैं तो अेक जबरदस्त सजा लगा दूं और बेफिक्र हो जाअूं। क्योंकि चोरीकी तरह यह अपराध भी कुछ अंशमें तो कल्पान्त तक जारी रहेगा ही। मैं अिस बातकी खोज रखनेके लिअे कोअी पुलिस-दल तैनात नहीं करूंगा कि कहीं गैरकानूनी शराबकी भट्टियां तो नहीं हैं। मैं तो सिर्फ यह घोषित कर दूंगा कि जो भी आदमी शराब पीया हुआ पाया जायगा, वह सख्त सजा पायेगा, चाहे वह कानूनी अर्थमें सड़कों या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर नशेमें बेहोश और अस्तव्यस्त हालतमें न भी पाया जाय। सजा या तो भारी जुर्मानेके रूपमें होगी या तब तकके लिअे अनिश्चित कैद, जब तक कि अपराधी अपने आपको रिहाअीका पात्र साबित न कर दे।

पर यह तो निषेधात्मक तरीका हुआ। अिसके अतिरिक्त स्वयंसेवकोंके दल, जिनमें कि खासकर बहनें होंगी, मजदूर-बस्तियोंमें काम करेंगी, जिन्हें शराबकी आदत है अुनके पास वे जायंगी और अुस लतको छोड़ देनेके लिअे समझायेंगी। मजदूरोंसे काम लेनेवालोंसे कानून यह अपेक्षा रखेगा कि वे अपने यहां काम करनेवालोंके लिअे अैसी सुविधायें कर दें, जिससे मजदूरोंको सस्ती और स्वास्थ्यवर्धक खाने-पीनेकी चीजें मिलें, वाचनालय और खेलके लिअे अैसे कमरे भी हों, जहां पर मजदूर थोड़ी देर जाकर आराम, ज्ञान, स्वास्थ्यकर खान-पान और निर्दोष मनोविनोदके साधन भी पा सकें।

अिस प्रकार शराबबन्दीके मानी केवल शराबकी दुकानें बन्द कर देना ही नहीं, बल्कि वह तो अेक तरहसे राष्ट्रमें प्रौढ़-शिक्षणका प्रारम्भ होगा।

शराबबन्दीका प्रारंभ सबसे पहले अिसी बातसे हो कि नअी दुकानोंके लिअे परवाने जारी करना कतअी बन्द कर दिया जाय और साथ ही शराबकी अैसी दुकानें भी बन्द कर दी जायं, जिनसे कि जनताको कष्ट और असुविधा होनेका भय हो। लेकिन मैं यह ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि दुकानदारोंको बगैर भारी मुआवजा दिये यह कहां तक संभव है। जो हो, जिनके परवाने खतम हो गये हों, अुन्हें फिरसे जारी करना तो जरूर रोक दिया जाय। हर हालतमें अेक भी नअी दुकान न खुलने पाये। जहां तक आयके घाटेसे सम्बन्ध है, हमें अुसका क्षणभर भी बगैर खयाल किये कानूनके अनुसार जितना हम कर सकें, तुरन्त कर डालना चाहिये।

मगर पूर्ण शराबबन्दीके मानी और अुसकी मर्यादा क्या है? पूर्ण शराबबन्दीके मानी है तमाम नशीले पेयों और मादक वस्तुओंकी बिक्रीकी पूरी रोक। अपवाद सिर्फ यह हो कि ये चीजें सिर्फ किसी अधिकृत डॉक्टर, वैद्य अथवा हकीमकी सिफारिश पर सरकारी डिपोसे मिलें, जो कि अिसी कामके लिअे खोले जायंगे। जो युरोपियन शराबके बिना नहीं रह सकते अथवा नहीं रहना चाहते, सिर्फ अुनके लिअे विदेशी शराबें परिमित मात्रामें मंगाअी जा सकती हैं। पर अिन्हें भी अधिकृत लोगों द्वारा ही खास-खास स्थानों पर बेचा जाय। भोजनालयों और अुपहार-गृहोंमें मादक पेयोंकी बिक्री कतअी रोक दी जाय।

(हरिजनसेवक, ३१-७-'३७)

कांग्रेसके लिअे अेक कठिन सवाल

"अेक लम्बे कड़वे संघर्षके बाद मद्रास और बम्बअी राज्यमें संपूर्ण शराबबन्दी हुअी है और दूसरे राज्य आंशिक रूपमें शराबबन्दीकी योजनाओंका प्रयोग कर रहे हैं। हमारे विधानमें भी संपूर्ण शराबबन्दीके आदर्शका जिक्र किया गया है। खुली शराब न मिलनेके कारण लाखों परिवार बरबादीसे बच गये हैं और संपूर्ण शराबबन्दीके थोड़ेसे अर्सेमें ही अुनकी स्थितिमें काफी सुधार हो गया है। बेशक, चोरीसे शराब पीना और नाजायज तौर पर शराब गालना आज भी कुछ हद तक जारी है; लेकिन अिसका कारण यह है कि जनमत अिसका विरोध नहीं करता और शराबबन्दीको अमलमें लानेके लिअे सारा आधार पुलिस पर रखा जाता है।

"आजादीके आते ही संपूर्ण शराबबन्दीका विचार बदल रहा है और अुसके खिलाफ अेक अजीब हलचल जोर पकड़ रही है। शुरूसे ही कांग्रेस हाअीकमाण्डने अिस विषयमें 'धीरे चलो' की नीतिका समर्थन किया है। अखिल भारत कांग्रेस कमेटीके बंगलोर अधिवेशनमें शराबबन्दीका जिक्र कांग्रेसके चुनाव घोषणापत्रमें जान-बूझकर छोड़ दिया गया। बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग भी अिसके खिलाफ हमेशा बोलते रहे हैं, और अखबारोंने भी मौका मिलने पर अुसकी निन्दा की है। अब मद्रासके शहरी निर्वाचन क्षेत्रके अेक अुम्मीदवार शराबको फिरसे दाखिल करनेकी हिमायत कर रहे हैं। श्री कुमारस्वामी राजाने अपनी हारके बारेमें खुलासा देते हुअे कहा कि बालिग मताधिकार पूरी तरह सफल हुआ। लेकिन मेरी हारका कारण शराबबन्दी है, क्योंकि मेरे मतदाताओंने मेरे अुन विरोधियोंको मत दिया, जिन्होंने शराबबन्दी रद्द करनेका अुन्हें वचन दिया था। धारा-

सभाका अेक चुना हुआ साम्यवादी नेता जाहिर करता है कि जब अुसकी पार्टीके हाथमें शासनकी बागडोर आयेगी, तो वह शराबबन्दीको खतम कर देगी। जब अुत्सुक पत्र-प्रतिनिधियोंने मद्रासके मुख्य मंत्री पर दबाव डाला, तो अुन्होंने कहा कि अिस साल कमसे कम ३१ मार्च तक शराबबन्दी पर जरूर अमल जारी रहेगा।

"अेक हारा हुआ अुम्मीदवार अपनी हारका अपना कारण बता सकता है और धारासभाके जीते हुअे सदस्यको अपनी प्रिय योजनाओं पर अमल करनेके लिअे ज्यादा बड़ी आमदनीकी जरूरत हो सकती है। लेकिन ये बातें संपूर्ण शराबबन्दीकी आर्थिक और नैतिक अुपयोगिताको असत्य नहीं ठहरा सकतीं। आर्थिक दृष्टिसे गरीब और सामाजिक दृष्टिसे निचले स्तरके लोग ही शराबसे बरबाद हो रहे थे; शराबबन्दीने अुन्हें बरबादीसे बचा लिया है। अब वे ज्यादा अच्छा खाना खाकर, ज्यादा अच्छे कपड़े पहनकर और ज्यादा अच्छे घरोंमें रहकर मनुष्यका जीवन बिताते हैं। यह सत्य दीये-सा स्पष्ट है, अिसे झुठलाया नहीं जा सकता। आज अिन सादे घरोंमें ज्यादा बड़ी शांतिका वास हो गया है। अिन लोगोंमें आत्म-सम्मानका भाव और नागरिक जिम्मेदारीका भान धीरे लेकिन निश्चित रूपसे बढ़ रहा है। जब नाजायज तौर पर शराब गालना-पीना भी पूरी तरह बन्द हो जायगा, तो हमारे लोग ज्यादा सुखी और सम्पन्न बनेंगे। केवल अैसे ही लोग सुधारकी योजनाओंको समझकर अुनसे लाभ अुठा सकते हैं।

"लेकिन हमारे राजनीतिज्ञ सुधार और समाज-सेवाकी हजारों योजनायें बनाकर शराबबन्दीको खतम करना चाहते हैं। अिसमें अुनका मुख्य अुद्देश्य आमदनी पाना है। खुली शराबसे बेशक सरकारको करोड़ों रुपयोंकी आमदनी होती थी, और संभव है अब अिससे भी कहीं ज्यादा आमदनी अुसे हो; लेकिन शराबबन्दीको रद्द करनेका अुन लोगों पर क्या असर होगा, जिनके लिअे ये सुधारकी योजनायें बनाअी जा जा रही हैं? अूपरी वर्गके खुशहाल लोग शराब नहीं पीते और पियक्कड़ोंमें से अधिकांश लोग आर्थिक और सामाजिक दृष्टिसे पिछड़े हुअे वर्गोंके होते हैं। जब अुन्हें खुलेआम शराब पीनेकी छूट दे दी जायगी, तो वे अपनी कमाअी बरबाद कर देंगे या शराब पीकर पशुवत् जीवन जीने लगेंगे। शराबबन्दी अुठा देनेके बाद अुनकी हालतको सुधारनेके लिअे किया जानेवाला सारा खर्च और प्रयत्न बेकार जायगा, क्योंकि वे अिन अच्छी बातोंकी कदर नहीं कर सकेंगे और आबकारीसे होनेवाली आमदनी अिन कामोंके लिअे काफी नहीं होगी। सरकारको आबकारी-करसे जो आमदनी होगी, वह अुस रकमका अंशमात्र होगी जो गरीब लोग शराबके पीछे बरबाद करेंगे। अुस आमदनीका ज्यादा बड़ा हिस्सा सरकारके बनिस्बत दूसरे लोग हड़प जाते हैं। अगर आबकारीकी आमदनी सुधार-योजनाओंके लिअे काफी हो, तो भी यह कदम किसीको लात मारकर नीचे गिराने और फिर अुठाने जैसा होगा। अगर शराबबन्दीको रद्द करनेके बदले शराबबन्दीकी नींव पर जनताकी हालतको सुधारनेकी छोटी योजनायें बनाकर अुन पर अमल किया जाय, तो अुनसे सचमुच समाजका बड़ा लाभ होगा।

"महात्मा गांधीने शराबबन्दीको केवल हमारी आजादीकी लड़ाअीका हथियार कभी नहीं माना। अुनकी निगाहमें यह बड़े महत्त्वका आर्थिक और सामाजिक सुधार था। विदेशी हुकूमतके लिअे भारतके आदमियोंको सूअर बनानेका कोअी कारण रहा होगा, लेकिन आजाद राष्ट्रके लिअे तो सूअर बनना पसन्द करनेकी और कीचड़में लोटनेकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अिसलिअे शराबबन्दीके खिलाफ होनेवाली हलचलको तुरन्त रोकना चाहिये।"

यह दक्षिणके अेक संतप्त हृदयकी पुकार है। दक्षिणमें शराबबन्दीके क्षेत्रमें किये-कराये पर जो पानी फेरा जा रहा है, अुससे लेखकको बड़ा दुःख हुआ है। अुन्हें डर है कि मद्रास सरकार शराबबन्दीके प्रिय कार्यको तेजीसे छोड़ रही है। अगर मद्रासमें सचमुच यह गड़बड़ी हो जाय, तो वह राज्य और कांग्रेसके लिअे भारी संकट सिद्ध होगी। मुझे लगता है कि कांग्रेस अैसी परिस्थितिकी गंभीरताको पूरी तरह नहीं समझती। यह दुःखद सत्य है कि आज कुछ राज्य-सरकारोंके लिअे, अंग्रेजोंकी तरह, शराबकी आमदनीके लोभको छोड़ना बड़ा कठिन हो रहा है। दूसरी तरफ, यह भी अुतना ही सच है कि शराबबन्दी अच्छी चीज है और हमारी सामाजिक और नैतिक स्वच्छता और स्वास्थ्यके लिअे जरूरी है। अिस बातमें भी कोअी शक नहीं कि अुससे गरीबोंको निश्चित और कल्याणकारी लाभ होता है। सच तो यह है कि भारतके विधानमें देशकी सारी राज्य-सरकारोंको अिस बारेमें स्पष्ट आदेश दिया गया है। अेक संगठनके नाते कांग्रेसने १९२० से अिस सुधारको सिद्धान्तके रूपमें अपनाया है। तब फिर हमारे रास्तेमें रुकावट क्या है? दुर्भाग्यसे मद्रासमें कांग्रेस केवल राजनीतिक क्षेत्रमें ही नहीं, बल्कि अिस रचनात्मक कामके क्षेत्रमें भी अपनी प्रतिष्ठा खो रही है। वर्ना, जैसा कि अखबारोंमें छपा है, राज्यकी अेक कांग्रेस कमेटी सरकारसे शराबबन्दी रद्द करनेके लिअे कहनेका प्रस्ताव कैसे पास कर सकती है? मैं नम्रतासे कहना चाहता हूं कि कांग्रेसके विधानके मुताबिक किसी कांग्रेस कमेटीका अैसा प्रस्ताव पास करना नियमके खिलाफ है। राज्यकी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीका फर्ज है कि अैसी गलती करनेवाली कमेटीको वह फटकार बतावे। लेकिन वह खुद ही क्या अिस प्रश्न पर अडिग है? सारी परिस्थिति बड़ी परेशान करनेवाली है। मेरी रायमें मद्रासके मित्रने अपने अूपरके पत्रमें अेक बड़ा बुनियादी प्रश्न खड़ा किया है। आज तक कांग्रेस ही अैसी मुख्य संस्था थी, जिसके जरिये लोग शराबबन्दी वगैरा रचनात्मक कार्योंमें भाग लेते थे। ये काम आज भी कांग्रेसके विधानकी बुनियाद बने हुअे हैं। लेकिन, जैसी कि पत्रलेखक शिकायत करते हैं, कांग्रेस कमेटियां और अखिल भारत कांग्रेस कमेटी भी अिस विषयमें ढीली पड़ रही हैं। तब फिर कैसे काम किया जाय? अुदाहरणके लिअे, पत्रलेखककी तरह जिनको अिस प्रश्नमें बड़ी दिलचस्पी है और जो अिस दुःखद परिस्थितिसे परेशान हैं, वे कैसे काम करें? कांग्रेसमें और कांग्रेसके बाहर जिन लोगोंका यह विश्वास है कि शराबबन्दी जल्दीसे जल्दी हमारे देशमें स्थायी चीज बन जानी चाहिये, वे अिसकी सिद्धिके लिअे कैसे काम करें? क्या कांग्रेस अुनका मजबूत गढ़ बनी रहेगी? या वह अपने हाथोंसे झंडेको गिर जाने देगी? अिस सवालका जवाब कांग्रेसको देना है। सभी चाहते हैं कि वह आजकी आमदनीकी लोभी सरकारोंके सामने न झुके। वर्ना वह जनताको दिये हुअे अपने पवित्र वचनको तोड़कर तुलनामें संदेहात्मक ध्येयोंके खातिर राजसत्ता प्राप्त करनेके लिअे अपनी आत्माको ही खो बैठेगी।

४-४-'५२ **मगनभाअी देसाअी**

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

२६ अप्रैल १९५२

बड़ी बनाम छोटी योजनाएँ

आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल लिखते हैं:

हालमें ही नअी दिल्लीमें हुअे भारतीय व्यापार और अुद्योग मंडलके रजत-जयन्ती अधिवेशनमें बोलते हुअे (अिस भाषणकी पी० टी० आअी० की रिपोर्टके अनुसार) प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरूने अेक महत्त्वकी बात कही। अुन्होंने कहा कि:

> "वे अधिकाधिक यह महसूस कर रहे हैं कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी बड़ी योजनाओंकी बनिस्बत छोटी योजनाओं पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिये। लेकिन योजनाअें बनाने या अुन पर अमल करनेके लिअे जो भी किया जाय, अिस बातका खयाल रखा जाना चाहिये कि अुनके तैयार होने पर अुन्हें चलानेके लिअे किसी तरहकी विदेशी मददकी जरूरत न पड़े।"

पण्डित नेहरूका यह वक्तव्य बहुत स्वागत योग्य है, बशर्ते वह भारत-सरकारकी आर्थिक और औद्योगिक नीतिमें परिवर्तनका सूचक हो। अभी तक सरकार बड़ी-बड़ी योजनाओंके प्रति असाधारण ममता प्रगट करती आयी है, और ये बड़ी योजनाअें अैसी हैं जिनका बोझ आजकी हालतोंमें हमारे जैसा गरीब देश अुठा नहीं सकता। अुनमें से कुछ कअी कारणोंसे असफल हुअी हैं; और कुछ अैसी हैं जिन्हें शुरू किया गया, लेकिन करोड़ों रुपये बरबाद करनेके बाद छोड़ देना पड़ा। क्योंकि बादमें मालूम हुआ कि अुन पर खर्च तो अत्यधिक होगा, लेकिन आर्थिक लाभ अुतना नहीं होगा। अिसके सिवा, अिन बड़ी और भव्य योजनाओंने, जिनमें नदियोंको बांधनेकी योजनाअें भी शामिल हैं, हमारे यहां विदेशी पूंजी और विदेशी विशेषज्ञोंके प्रवेशका अेक सिलसिला ही बांध दिया है। पूंजी और विशेषज्ञ खासकर अमेरिकासे आ रहे हैं। प्रधान मंत्रीने यह अुम्मीद प्रगट की है कि योजनाअें पूरी होने पर विदेशी मददकी जरूरत नहीं रहेगी। लेकिन जब तक भारत बड़े-बड़े यंत्रों और अिन यंत्रोंके अुपकरणोंका निर्माण नहीं करने लगता, तब तक यह अुम्मीद अुम्मीद ही रहेगी।

भारतकी मुख्य समस्या, जो हमारे सामने निरन्तर मुंह बाये खड़ी रहती है, गरीबी, बेकारी और अुससे भी ज्यादा अर्ध-बेकारीकी है। हमारे पास मनुष्य ज्यादा हैं, अिसलिअे हमारे पास श्रमशक्ति तो है, पर पूंजीके साधन बहुत कम हैं। अिसलिअे हमें स्वभावतः राष्ट्रीय निर्माणकी अैसी योजनाअें चाहियें, जिनके विकास और सम्पादनमें पूंजीकी जोड़का नहीं, श्रमकी जोड़का महत्त्व हो। अगर हम अपनी देहाती जनताके लाखों बेकारों और अर्ध-बेकारोंको पूरा काम-धंधा देना चाहते हैं, तो सरकारको चाहिये कि वह काफी बड़ी संख्यामें अनेक छोटी-छोटी योजनाअें चलाये। ये योजनाअें देहातोंमें काम-धन्धा तो देंगी ही, अुनसे हमारे प्रत्येक गांवमें स्वराज्यका अुजाला भी पहुंचेगा। आज कहीं दूर, बड़ी-बड़ी योजनाओं पर अमल हो रहा है और वे मूर्त रूप ले रही हैं, अिस खबरसे गांववालोंको कोअी अुत्साह नहीं अनुभव होता; अुनकी दिलचस्पी अुनके अपने गांवोंमें है और वे चाहते हैं कि अुनके आर्थिक हितके लिअे अुनकी आंखोंके सामने ही कुछ जल्दीसे किया जाय। अपने चुनावके सिलसिलेमें गांवोंका दौरा करते हुअे मैंने देखा कि गांवकी प्रजा अपनी हालत सुधारनेके लिअे कितनी बेचैन है। वह जमीन चाहती है, गांवोंमें सड़कें और कुअें तथा आबपाशीके दूसरे छोटे-मोटे साधन चाहती है, और स्कूल तथा अस्पताल चाहती है। वे लोग अपने हितकी अैसी योजनाओंमें अपना श्रम भी देनेको तैयार हैं, बशर्ते कि अपने श्रमका फल अुन्हें नजदीक भविष्यमें और अपने गांवमें ही देखनेको मिले। यही कारण है कि गांधीजी सामाजिक और आर्थिक कल्याणके विकेन्द्रित नियोजन और रचनात्मक कामको अितना महत्त्व देते थे। ग्राम-हितकी अिन छोटी-छोटी योजनाओंके लिअे विदेशी पूंजी और विशेषज्ञों और सलाहकारोंकी जरूरत नहीं है; अुन्हें वहींका वहीं और जल्दी पूरा किया जा सकता है।

अिसका यह अर्थ नहीं है कि बड़ी योजनाअें होनी ही नहीं चाहियें। लेकिन अिनकी संख्या भरसक कम होनी चाहिये, और अुनका क्षेत्र बुनियादी और आधारभूत (key) अुद्योगों तक ही मर्यादित होना चाहिये। हमारे राष्ट्रीय पुनर्निर्माणके मुख्य और अधिकांश भागका आधार तो अनेक छोटी-छोटी योजनाअें ही होनी चाहियें, जो देहातोंमें व्यापक रूपसे फैली हुअी हों। हम अुम्मीद करते हैं कि योजना-कमीशन अपनी पंच-वार्षिक योजनाको अन्तिम स्वरूप देते समय अपने दृष्टिकोणमें अिस हितकारी परिवर्तनको अपनायगा।

पी० टी० आअी० की अुक्त रिपोर्टसे 'टाअिम्स ऑफ अिन्डिया' (३१ मार्च) की रिपोर्ट कुछ भिन्न है। 'टाअिम्स ऑफ अिन्डिया' की रिपोर्ट अिस प्रकार है:

> "श्री नेहरूने कहा कि अुन्हें यह अधिकाधिक महसूस होने लगा है कि औद्योगीकरणकी बड़ी योजनाओंके बजाय फरीदाबाद और नीलोखेरी जैसी जन-विकास (community development) की छोटी-छोटी योजनाओं पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिये।"

पी० टी० आअी० की रिपोर्टमें फरीदाबाद और नीलोखेरीका कोअी जिक्र ही नहीं है। यह भाषण हिन्दीमें हुआ था। अैसा लगता है कि नयी दिल्लीके 'हिन्दुस्तान'में अुसकी जो रिपोर्ट आयी है, वह शब्दशः पूरी है। अुसमें सामान्य तौर पर यह कहनेके बाद कि बड़ी योजनाओंसे छोटी योजनाअें अच्छी हैं, फरीदाबाद और नीलोखेरीकी योजनाओंका अुल्लेख हुआ है। भाषणके अिन दो अंशोंके बीचमें और भी बातें आ गयी हैं, तब भी भाषणके आशयका खयाल करते हुअे यही अनुमान करना ठीक होगा कि छोटी योजनाओंसे श्री नेहरूका मतलब अूपर कही हुअी फरीदाबाद और नीलोखेरी जैसी योजनाओंसे ही है।

अिन योजनाओंके जो विवरण मेरे पढ़नेमें आये हैं, अुनसे फरीदाबाद, नीलोखेरी और अिटावा योजनाअें अेक ही प्रकारकी नहीं मालूम होतीं। तीनमें से अिटावाकी योजना ही अैसी है, जिसमें ग्राम-दृष्टि रखी गयी मालूम होती है, अगरचे अुसमें और ग्रामोद्योग संघकी दृष्टिमें फर्क है। ग्रामोद्योग संघकी और अिटावा योजनाकी दृष्टियोंमें क्या सुधार या फर्क करनेकी जरूरत है, यह तो अनुभव ही बतायेगा।

श्री नेहरूके भाषणमें अिटावाका अुल्लेख नहीं किया गया दीखता। यह कहना कठिन है कि अुन्हें अिटावा-योजनाके लिअे ज्यादा आकर्षण है या फरीदाबाद-नीलोखेरीके लिअे। अगर अुनका आकर्षण फरीदाबाद-नीलोखेरी योजनाओंके प्रति ही अधिक है, तो योजनाकी यह दृष्टि भी अुतनी ही शंकास्पद है जितनी कि बड़ी योजनाओंकी। क्योंकि बड़ी योजनाओंकी तरह ये योजनाअें भी विदेशी पूंजी और सलाह पर निर्भर रहेंगी। वे स्वाश्रयी और स्वावलम्बी नहीं हो सकतीं। कह नहीं सकते कि अिटावा-योजनाके विषयमें अैसा होगा या नहीं। पर मैं आशा करता हूं कि श्री नेहरूकी अुम्मीद कमसे कम अिटावा-श्रेणीकी योजनाओंमें सही निकलेगी।

पण्डितजी बड़ी-बड़ी योजनाओंसे छोटी-छोटी अुपनगरियोंकी विकास-योजनाओं पर आ गये, यह भी कोअी कम बात नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें अपनी परिस्थितियोंका खयाल करते हुअे और अधिक वस्तुदर्शी (या यों दूसरी दृष्टिसे आदर्शदर्शी) बनना पड़ेगा, और अभी कुछ सालों तक तो अपनी योजनाओंको कुछ और नीचे तल पर बनाना होगा। घनी आबादीवाली और कारखानों तथा आमोद-प्रमोदके साधनोंसे पूर्ण नगरियोंके निर्माणकी योजनाओंके बजाय हमें हर छोटे-से-छोटे गांव पर ध्यान देना होगा और अुसका अुसी जगह अैसा विकास करना होगा कि वहां पूरा अुत्पादन हो, हरअेकको पूरा काम-धंधा मिले और सारा गांव स्वावलम्बी बन जाय। नगर-नगरियां कम आदमियोंको काम देंगी और अुन्हें ज्यादा कमाअीकी सुविधा देंगी। फिर अुनमें आसपासके गांवोंसे अैसे लोग आने लगते हैं, जिन्हें वहां काम नहीं मिलता और कठिन समस्याअें पैदा करते हैं। बहुतसे लोगोंके दुःख और क्लेश पर कम लोग अूंचे जीवन-मानका सेवन करते हैं। और अन्तमें अिससे चोरियां, लूटमार, क्रांतियां और संहारकी नौबत आती है। अिन समस्याओंको सुलझानेका जो राजनीतिक हल निकाला गया है, वह है समय-समय पर छोटे और बड़े युद्ध चलाते रहना। और आजकी सभ्यतामें ये युद्ध अेटम, पेट्रोल, रोगोंके कीटाणुओं आदि घृणित अुपायोंकी मददसे दुनियाके लिअे सम्पूर्ण विनाशकारी भी हो सकते हैं। योजनाअें बड़ी हों या छोटी, जब तक योजनाओं और विज्ञानका सम्बन्ध व्यापारके साथ जुड़ा हुआ है, और जब तक अुनकी व्यवस्था सरकारी या व्यापारी तंत्रके बड़े-बड़े वेतन और मुनाफा लेनेवाले शासन-विशेषज्ञों या यंत्र-विज्ञानके विशेषज्ञोंके हाथमें है, तब तक लोगोंको अुससे कभी सुख नहीं मिलेगा, तब तक सम्पत्ति और समृद्धिके बीच भुखमरी और बेकारी रहेगी, कानून और व्यवस्थाके नाम पर स्वातंत्र्य और व्यक्तित्वका दमन होता रहेगा, यंत्र-विज्ञानकी प्रगतिके नाम पर मनुष्योंका यंत्रीकरण होगा, और बहुत मेहनत और धन लगाकर बनाये हुअे मालका नाश और मनुष्योंका संहार चालू रहेगा।

जो भी हो, मैं आशा करता हूं कि श्री जवाहरलाल नेहरू छोटी-छोटी योजनाओंके विषयमें अपने विचारोंमें और गहरे अुतरेंगे और आधुनिक रंग-ढंगकी नगर-नगरियोंके निर्माणके बजाय अुन गांवोंके पुनर्निर्माणकी ओर बढ़ेंगे, जो अुपेक्षा और शहरों द्वारा किये गये शोषणके कारण आज अन्तिम सांस ले रहे हैं।

वर्धा, ७-४-'५२ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

राजस्थानकी अगुआअी

जयपुर—राजस्थान—के ता० १-४-'५२ के 'लोकवाणी' से पता चलता है कि राजस्थानकी विधान-सभाकी कांग्रेस पार्टीने अपने मेम्बरों पर खादी पहननेकी पाबन्दी नहीं रखी है। जब खादी ही अनिवार्य नहीं रही, तब प्रमाणित-अप्रमाणित खादीका तो प्रश्न ही नहीं अुठता। 'लोकवाणी' ने दोनों बातों पर अपने अग्रलेखमें खेद प्रगट किया है। खादी-प्रेमी होनेके कारण 'लोकवाणी' के सम्पादकके खेदसे मुझे समभाव अवश्य है। परन्तु मैं अिस बातको केवल राजस्थानकी अगुआअीके रूपमें देखता हूं। असंभव नहीं कि दूसरे प्रदेशोंके धारासभासद भी राजस्थानका अनुसरण करने लगें। खादीनिष्ठा नेतावर्गमें घटने लगी है, और ज्यादातर अुन्हीं प्रदेशोंमें जहां खादी बड़े पैमाने पर पैदा होती है और हो सकती है। अिसी अनुभवसे गांधीजी खादीके विषयमें वस्त्र-स्वावलम्बनके सिद्धांत पर आ गये, और चरखा संघ व्यापारी खादीको छोड़ने लगा है। जनताको अपने ही हितमें खादी बनाना और पहनना सिखाना होगा। राज्य द्वारा अुसे बढ़ानेकी कोशिश छोड़नी होगी।

वर्धा, ११-४-'५२ कि० घ० म०

विनोबाकी अुत्तर प्रदेश यात्रा — २

भूमि-समस्या

अुत्तर प्रदेशमें भूमिकी समस्या अपना अेक विशिष्ट रूप रखती है। पूर्वी जिलोंमें अेक प्रकारकी, पश्चिमी जिलोंमें दूसरे प्रकारकी। जमीनके जितने छोटे छोटे टुकड़े पूर्वी जिलोंमें हैं, अुतने पश्चिममें नहीं हैं। न वैसी छोटी-छोटी जमींदारियां ही हैं, जैसी पूर्वमें। ट्यूब-वेल्स, नहरें, आदि सब सुविधाअें जैसी पश्चिमको प्राप्त हुअी हैं, वैसी पूर्वको नहीं। परन्तु अिनसे भी जितना लाभ बड़ा जमींदार अुठा सकता है, अुतना छोटा काश्तकार नहीं अुठा सकता। क्योंकि वर्षाकी बूंदोंकी तरह नहरोंका पानी सबको समान रूपसे अुपलब्ध नहीं हो सकता। पूर्वमें घागरा और सरजूने हजारों अेकड़ भूमिको अपने प्रवाहमें बहा ले जानेका सिलसिला जारी रखा है। गन्ने और गल्लेकी समस्या दोनों ओर समान है। गन्नेके कारण पूर्व पश्चिम दोनों जगहका गुड़ और देशी शक्करका अुद्योग गिर गया है। सबसे बड़ी बदकिस्मती यह हुअी कि चीनीकी मिलोंके लिअे बोया जानेवाला गन्ना भूमिकी अुर्वरा शक्तिका शोषण कर लेता है। जानकारोंका कहना है कि जमीन बहुत जोरोंसे कमजोर होती जा रही है।

अभी-अभी जो जमींदारी अुन्मूलन कानून यहां हुआ है, अुससे किसानोंकी हालत और भी खराब हो गयी है। बड़े-बड़े जमींदारोंने जमीनोंका बंटवारा अपने रिश्तेदारोंके नाम कर लिया है, और रही सही जमीनके बड़े-बड़े फार्म बनवा दिये हैं। जमींदारी गअी, फार्मदारी आयी, जिसके लिअे 'अधिक अन्न अुपजाओ' के नाम पर सुविधा है। फार्म हजार दो हजार अेकड़के नहीं, पन्द्रह हजार अेकड़ तकके हैं। बरसोंसे खेती करनेवालेको बेदखल किया जा रहा है। अिन फार्मों पर काम करनेवाले मजदूरोंकी परिस्थिति बहुत दुःखदायी है। अिनमें से बहुतसे गोरखपुर और बस्ती जिलोंसे आये हुअे हैं। मजदूर लोग फार्म पर गेहूं और दूसरा कोअी तरहका अनाज अुगाते हैं। परन्तु अुनका अुस फसल पर कोअी हक नहीं होता। अुन्हें पैसेके रूपमें वेतन मिलता है और अनाज वगैरा बाहर रेशनकी दुकानसे खरीदना पड़ता है। वे फार्मोंमें अुत्तमसे अुत्तम गेहूं पैदा करते हैं, जो अूंचे दामों पर बिकता है। अिन मजदूरोंको रेशनकी दुकानसे जैसा और जो कुछ मिले अुसी पर गुजर-बसर करना पड़ता है। जैसे हलमें जुते हुअे बैलका फसल पर हक नहीं होता, वैसे ही हल जोतनेवालेका भी नहीं हो सकता। अिस असह्य और असहाय परिस्थितिका अिलाज भी भूदान-यज्ञ ही है। सामाजिक समस्यायें भी अुत्तर प्रदेशमें कम नहीं हैं।

परदा

तेलंगानामें पुरुषोंकी बराबरीमें स्त्रियां आती थीं। यहां कभी बार तो वे सभाओंमें दिखाअी ही नहीं देतीं। दिखाअी भी देती हैं तो बहुत कम संख्यामें। और आती भी हैं तो अिसी वजहसे कि विनोबाजी जैसे संतपुरुषका दर्शन कर सकें, अुनकी वाणी सुन सकें। अन्य सभाओंमें प्रायः स्त्रियां नहींके बराबर होती हैं। पिवारी नामक अेक गांवमें स्त्रियां तीस बरस पहले बापूजीकी सभामें आयी थीं। अुसके बाद अिस बार विनोबाजीकी सभामें आयीं। लेकिन आयीं तो भी बैठी थीं चिकके परदोंकी आड़में। विनोबाजीके कहनेसे परदे हटवाये गये और गांवके प्रमुख व्यक्तियोंने विश्वास दिलाया कि आअिन्दा परदोंका अुपयोग नहीं किया जायगा। दूसरे अेक स्थान पर स्त्रियां आना चाहती थीं, लेकिन घरवालोंके खौफसे आ नहीं पाती थीं। सभा अुन्हींके घरके आंगनमें थी। बहनोंकी हिमायती हमारी महादेवी ताअीसे यह बरदाश्त नहीं हुआ। शिकायत विनोबाजीके सामने पेश हुअी और बहनें सभामें आयीं। विनोबाजीने शुरूमें पिवारीका जिक्र करते हुअे कहा कि वहां पर स्त्रियोंको यह भी पता नहीं था कि अुन्हें बोलनेका

हक मिला है। वे वोट देने गयीं भी नहीं। दिल्लीमें अिस बार मुसलमानोंकी स्त्रियोंने और महाराष्ट्रमें हरिजन स्त्रियोंने अधिकसे अधिक संख्यामें वोटिंग किया। जब आप स्त्रियोंको मताधिकार देते हैं, तो मुझे ताज्जुब होता है कि यहां अेक भी स्त्री हाजिर न हो। आप लोग जो हिन्दू हैं अकसर शास्त्रका आधार लेकर बात करते हैं। लेकिन शास्त्रमें तो स्त्रीके बिना कोअी भी शुभ कार्य संपन्न नहीं होता। रामचन्द्रको यज्ञ करना था। गृहस्थकी पत्नी मौजूद हो, तो बिना अुसके यज्ञ संपन्न नहीं हो सकता। आखिर मिट्टीकी सीता बनाकर रामचन्द्रके साथ यज्ञमें बिठाअी गयी। हम लोग सीताराम, राधेश्याम कहते हैं। लेकिन स्त्रियोंको जेलमें रखते हैं। नतीजा यह हुआ है कि देश कमजोर हो गया है। दक्षिणमें कम्युनिस्टोंकी आवाज स्त्रियों तक पहुंची है और वहां पर स्त्रियोंने पुरुषोंकी बराबरीसे वोटिंग किया है। क्या वे सब हिन्दू नहीं हैं? जिन लोगोंने परदेका यह मुसलमानोंका रिवाज अपनाया है, अुनसे मैं पूछना चाहता हूं कि क्या आप लोग मुसलमान हैं? दूसरोंके अच्छे रिवाज लेनेमें हर्ज नहीं। लेकिन अैसे रिवाज, जिनसे हमारी स्त्रियां गुलाम बनती हों और देशकी शक्ति क्षीण होती हो, नहीं लेने चाहियें।

जो लोग मानते हैं कि स्त्रियोंको परदेमें न रखनेसे कोअी खराबी पैदा हो सकती है, वे भूलते हैं। बुरे काम जितने भी हो सकते हैं, वे सब अन्धेरेमें ही हो सकते हैं। फिर जिन बच्चोंकी माताअें अपढ़ और बेवकूफ रहेंगी, वे बच्चे कैसे होंगे? हमने मदरसेमें जो ज्ञान पाया, अुससे कितना ही ज्यादा ज्ञान हमें घरमें अपनी माता से मिला है। अुन्होंने महाभारत और रामायणकी कितनी कहानियां हमें सुनाअीं। संतोंके भजन सुनाये। अगर वह सब हमें नहीं मिलता, तो जो ज्ञान हमें मिला अुससे हम वंचित रह जाते। अिसलिअे प्रथम गुरु माताको माना है, दूसरा पिताको और तीसरा मदरसेके अध्यापकको। लक्ष्मणने जब मातासे रामके साथ बनमें जानेकी बात पूछी, तो अुसकी माताने अुसे रोका नहीं, बल्कि यही कहा कि बेटा जाओ; लेकिन यह मत समझना कि जंगलमें हो, जहां रहो वहीं अयोध्या नगरी समझना। और यह भी मत समझना कि माता-पितासे बिछुड़ रहे हो। यही समझना कि सीता तुम्हारी माता है और रामचन्द्र पिता। लक्ष्मणकी माता अगर मूर्ख होती और कहीं वह लक्ष्मणको रोक लेती, तो रामायण भी बनती या नहीं मुझे शंका है। हम 'राम लक्ष्मण जानकी, जय बोलो हनुमानकी' कहते हैं। लेकिन हमें समझना चाहिये कि रामायणकी चाबी तो सुमित्रा है, जिसने मोहवश लक्ष्मणको रोका नहीं। हंसते-हंसते अुसे रामके साथ बिदा कर दिया।

अन्तमें कहा, "हमें भूलना नहीं चाहिये कि स्त्रियोंमें भी परमेश्वर है। अगर स्त्रीको देखकर किसीके मनमें विकार अुत्पन्न होता है, तो अुसकी वह रद्दी आंख क्यों नहीं फोड़ डाली जाती? द्रौपदीको जब सभामें लाया गया, तो अुसके अेक अेक सवाल पर 'भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मित' अैसा कविने गाया है। गार्गीने याज्ञवल्क्य की सभामें जो प्रश्न पूछे, अुस गार्गी-याज्ञवल्क्य संवादको हम अुपनिषद्के तौर पर पढ़ते हैं। कविने लिखा है कि गार्गीके प्रश्न तीरके जैसे थे। आपकी स्त्रियां आतीं और मेरी आवाज ठेठ अुनके दिलों तक पहुंचती, तो क्या नुकसान होता? अगर आप लोगोंने स्त्रियोंको पिछड़ी हुअी रखा, तो जहां अेक ओर सारी दुनिया आगे बढ़ेगी, आप लोग पीछे रह जायंगे।

"आप लोग सीताराम, राधेश्याम कहते हैं और स्त्रियोंको बन्दोबस्तमें बन्द रखते हैं। मेरी समझमें नहीं आता कि राम और कृष्ण कैसे आप पर प्रसन्न हो सकते हैं। मैं हिन्दू धर्मका ज्ञान रखता हूं। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि स्त्रियोंको बन्द रखनेका विधान कहीं भी नहीं है। गांधीजीने स्त्रियोंको शराबकी दुकानों पर पिकेटिंगके लिअे भेजा। शराबियोंके बिमार ठिकाने पर नहीं रहते। अिसलिअे गांधीजीने सोचा कि स्त्रियां पवित्र होती हैं, चरित्रवान होती हैं, नम्र होती हैं। अिसीलिअे अुनके द्वारा शक्ति अधिक प्रगट हो सकती है। और यहां तो स्त्रियां वोटिंगके लिअे भी नहीं जातीं। जिनकी स्त्रियां वोटिंगके लिअे नहीं जायंगी, वह पक्ष अब हार जायगा, यह हमें समझ लेना चाहिये।"

शराब

स्त्रियोंकी तरह शराबकी समस्या भी यहां मौजूद है। जगह-जगह शराब पीनेवालोंके तथा शराबकी आमदनीके जो आंकड़े मिलते हैं, अुनसे शरम आये बिना नहीं रहती। पुरुष तो पीते ही हैं, परन्तु स्त्रियां भी पीती हैं। हुक्का भी और शराब भी। अेक गांवमें साक्षरोंकी अपेक्षा शराबखोरोंकी संख्या तिगुनी थी। विनोबाजीने पूछा, "क्या आप लोग ज्ञानकी अपेक्षा शराबको तीन गुना महत्त्व देते हैं?" शराबका चित्र खींचते हुअे कहा: "शराबी अकल खोता है। अकल खोअी यानी क्या नहीं खोया? शराबी सेहत बिगाड़ लेता है। घरमें स्त्रियोंको पीटता है और न जाने क्या क्या करता है। शास्त्रोंमें अुसे पंचमहापातकोंमें से अेक बताया है। तो आप लोग भगवानके सामने शपथ लें कि आअिन्दा शराब नहीं पीयेंगे। स्त्रियोंको भी शराब पीना छोड़ देना चाहिये। वे पतिव्रता हैं यानी पतिके व्रतकी रक्षा करनेवाली हैं। अुनका काम यह नहीं है कि पतिके दुर्गुणोंकी भी रक्षा करें।"

अिसका अिलाज बतलाते हुअे कहा: "अुत्तर हिन्दुस्तानमें पहले घर-घर रामायणकी कथा चलती थी। पर आजकल तो रामायण चलती दिखाअी नहीं देती। अगर रामभक्तिका प्रचार होगा, तो शराब नहीं चलेगी। अिस व्यसनको छोड़ दीजिये। व्यसन होना चाहिये, लेकिन ज्ञान सुननेका, भक्तिका। मैं चाहता हूं कि आपके गांवोंमें रामकथा चले। कोअी भी रामकथा सुननेवाला शराब नहीं पी सकता। रामनामकी खूबी ही यह है कि वह राक्षसोंको भगाता है। और शराब रावणसे कम राक्षस नहीं है।"

मैंने अूपर कहा ही है कि पांवमें गहरी चोट लग जानेके बावजूद भी कभी कुर्सी पर तो कभी गाड़ी पर, लेकिन विनोबाजीकी यात्रा जारी रही। कुछ दिन कुर्सी पर बैठनेके बाद लगा कि शायद पांव ठीक हो गया। अिसलिअे वाहनमें नहीं बैठे। लेकिन अुस रोज रास्ता अिक्कीस मील निकला और बिलकुल घना जंगल — अत्यन्त नीरव। शांति भंग होती थी केवल हमारे चलनेके कारण होनेवाली पत्तोंकी आवाजसे। वैसे हमारे साथ हथियारबन्द पुलिस कभी नहीं रहती। परन्तु आज जब जंगलोंमें अुनको भी साथ पाया, तो मैंने सहज पूछा, "आप लोगोंने क्यों कष्ट किया?" अुनके मुखियाने बताया कि अिधरसे अकसर जानवर निकलते रहते हैं। जानवरसे अुनका मतलब शेर आदिसे था। थोड़ी ही देर बाद हमने हिरन तथा पंछियोंकी घबराहट भरी आवाज सुनी। अुन लोगोंने हमारा ध्यान अुधर आकर्षित किया। दस मिनट बाद ही पगडंडी पर शेरके पंजेके निशान दिखाअी पड़े। बड़े स्पष्ट और कितनी ही दूर तक अुठे हुअे थे। थोड़ी देर पहले ही वह यहांसे गुजरा होना चाहिये। वनके अन्य पशुओंकी घबराहटका यही कारण था, और जो शांति थी अुसका भी शायद यही कारण था।

अैसे घने जंगलोंमें से कअी बार गुजरना पड़ा। हिमालयके दर्शन अकसर होते। विनोबा कअी बार बड़ी अर्थपूर्ण निगाहसे टकटकी लगाये हिमराजकी ओर देखते। छत्तीस बरस पहले वे अिसी हिमगिरिमें तपस्या करनेके अिरादेसे घरसे चले थे। बनारस तक आये भी। किन्तु फिर अुत्तरके बजाय पश्चिममें, साबरमतीके किनारे बापूके रूपमें अुन्होंने अेक अैसा महामानव पाया कि हिमालय भी संकुचा गया।

आज अुन्हींके चरण-चिन्हों पर परन्तु अपने कदमों पर विनोबाजी विश्वको प्रेम और अहिंसाकी शक्तिका साक्षात्कार करानेकी कल्पनासे

दरिद्रनारायणकी अुपासनामें गांव-गांव, डगर-डगर, नदी और पहाड़ोंमें घूम रहे हैं। वे न केवल अर्थसाम्यकी बात कहते हैं, न केवल दरिद्र-नारायणका हक प्रस्थापित करते जा रहे हैं, बल्कि अुन्नत धर्मका पथ दिखाते हुअे, धर्मकी नयी मर्यादा कायम करते हुअे और भक्तिमार्गकी दीक्षा देते हुअे बढ़े चले जा रहे हैं। अुन्होंने कहा, "हमें क्षात्र धर्मकी भी नयी मर्यादायें कायम करनी होंगी। यह दिखाना होगा कि क्षत्रियत्व युद्ध करनेमें नहीं, युद्ध रोकनेमें है, सबको बचानेमें है। जो वीरता सबको बचानेमें अपनेको मिटा देगी, वही सच्ची वीरता है। अैसा क्षात्रधर्म हम कायम करना चाहते हैं। मारनेके बजाय मर मिटनेका धर्म हम स्थापित करना चाहते हैं। अिस भूदान-यज्ञके तरीकेमें यह धर्मनीति छिपी हुअी है।"

संन्यास धर्मको समझाते हुअे कहा: "संन्यास शब्दसे बढ़कर पवित्र शब्द आज दुनियाके कोषमें नहीं निकल सकता। संन्यासमें कल्पना यह है कि बाप खुद वानप्रस्थी बने और बेटेको परिवार सौंप दे, ताकि बेटेका गुण-विकास हो। यह न्याय जैसे कुटुम्बको लागू है, वैसे ही समाजको भी लागू है। लेकिन हम देखते हैं कि क्या कांग्रेसमें और क्या हमारी रचनात्मक संस्थाओंमें, जब तक नये लोग आकर पुरानोंको धक्का नहीं देते, पुराने हटते नहीं। अगर पुराने लोग स्वेच्छासे नयोंको मौका दें, तो नये लोगोंका विकास होगा और पुरानोंके अनुभवका लाभ भी अुन्हें मिलेगा। देश नित्य विकासकी ओर बढ़ता रहेगा।"

और भगवानका साक्षात्कार कराते हुअे कहा: "भगवान कृष्णका अवतार आज भी मौजूद है। लेकिन अगर हमें आंखें हों तो ही हम अुसे देख सकते हैं। जिन्हें आंखें नहीं थीं, वे अुस समय भी भगवानको नहीं पहचान सके थे। शिशुपालको और जरासंधको अुस समय भी वह नहीं दिखा था। भगवान आज भी हमारे दिलोंमें मौजूद है। हमें चाहिये कि हम अुसे पहचानें और जिस तरह कृष्णने सारा गोकुल प्रेममय बना दिया था, हम भी अपने गांवको प्रेममय बना दें। जिनके पास जमीन नहीं है, अुनको जमीन देनेसे यह हो सकता है। जहां जमीन दे दी वहां कायमकी रोटी मिल गयी। जमीन देनेसे गांववालोंमें प्रेमभाव बढ़ेगा। फिर गांवके गरीब लोग कहेंगे कि अिस दुनियामें हम आज तक भगवानका नाम ही सुनते थे, वह कहीं दीखता नहीं था। परन्तु आज तो अुसका दर्शन भी हो रहा है, क्योंकि गांवमें प्रेमका अनुभव हो रहा है।"

अेक रोज कहा, "अब युद्धपर्व समाप्त हुआ है। अुद्योगपर्व शुरू हुआ है।" अुद्योगपर्वके बारेमें अपनी कल्पना भी समझायी। ऋषिने गाया था — 'वह भी पूर्ण है, यह भी पूर्ण है।' हम भी गायें — "वह गांव भी पूर्ण, यह गांव भी पूर्ण।" जीवनकी कलाका दर्शन कराते हुअे कहा, "अपने सुखमें दूसरेको हिस्सा देना और दूसरेके दुःखमें हिस्सा बंटाना, यही जीवनकी कला है। यह चाबी जिसने पायी, अुसने जीवनमें सुख ही सुख पाया।"

साहित्य-प्रचार

अिस तरह अिधर लोग नित दान-गंगा बहा रहे हैं, अुधर विनोबा नित ज्ञान-गंगा बहा रहे हैं। अुनके रोजके प्रवचनोंमें मिलनेवाले मानसिक पोषणके अतिरिक्त अिस बार अुन्होंने अेक और बात पर विशेष जोर दिया — साहित्य प्रचार पर। अुन्होंने कहा: "लोगोंने यह मान लिया है कि चिन्तन, मनन, पठन या तो विद्यार्थियोंका काम है या संन्यासियोंका। यह गलत खयाल है। जिस घरमें विचारोंका पठन नहीं होता, वह गृहस्थाश्रमीका घर ही नहीं है। मेरी पुस्तक जिस घरमें जायगी, अुस घरका कल्याण होगा।" वे कहते हैं, "मैं आपके साथ अेक ही रोज रहूंगा। पर मेरे विचारोंके जरिये मेरा आपका सत्संग स्थायी रूपसे बना रहेगा। विचार तो पानीकी तरह है। पानीके अभावमें वृक्ष सूख जाते हैं। कामको अगर विचारका पोषण न मिले, तो कार्यकर्ताका अुत्साह सूख जाता है। विचारके पोषणसे अुत्साह बना रहता है। अुसीको सत्संग कहते हैं। जो अध्ययन करते हैं, अुन्हें भीतरसे निरन्तर स्फूर्ति मिलती रहती है। अुनकी श्रद्धा काम करनेमें नित्य निरंतर बढ़ती रहती है। जीवनमें वे नित नूतन त्याग-रसका अनुभव करते हैं।"

विनोबाजी अकसर 'गीता-प्रवचन', और 'भूदान-यज्ञ' अिन दो पुस्तकोंकी सिफारिश करते हैं। वे कहते हैं, "गीता-प्रवचन जैसा लज्जतदार और मिष्ट प्रसाद दूसरा कोअी हो नहीं सकता। गीता-प्रवचन मेरे जीवनकी गाथा है।" विनोबाजी चाहते हैं कि कोअी घर अैसा न रहे, जहां हिन्दी पढ़ी जाती हो और 'गीता-प्रवचन' न हो। "आप मेरे विचारोंको समझ जावेंगे, तो जो विचार मुझे प्रेरणा दे रहे हैं, वे आपको भी देंगे। फिर मुझे आज जो अकेलेको काम करना पड़ रहा है, वह आप सब अनन्त हाथों, अनन्त मुखोंसे करेंगे।" अिस तरह अब तक 'गीता-प्रवचन' की करीब दस हजार प्रतियां बिक चुकी होंगी। 'सर्वोदय' के भी २५० से अूपर ग्राहक बने होंगे। अिस प्रकार सर्वोदय-साहित्य-प्रचारका कार्य अिस यात्राका अेक महत्त्वपूर्ण अंग बन गया है।

मेरठसे सीतापुर तककी यात्रामें अनेक स्थान अैसे हैं, जिनका अैतिहासिक अेवं सांस्कृतिक महत्त्व तो है ही, किन्तु भूदान-यज्ञकी दृष्टिसे जिनका अब और नया महत्त्व बन गया है। मेरठका गांधी आश्रम, हल्द्वानीका आश्रम, देवबन्दका अंतरराष्ट्रीय मुस्लिम सांस्कृतिक केन्द्र तथा अन्य अनेक स्थान हैं, जहां आत्मीयताके सम्बन्ध कायम हुअे और भूदान-यज्ञमें जुट जानेवाले कार्यकर्ता प्राप्त हुअे। अुन सब स्थानोंका जिक्र करनेका मोह संवरण करना होगा। भूदान-यज्ञ-आन्दोलनके अितिहासमें अुनका अमर स्थान है। अुन्हीं स्थानों और व्यक्तियोंमें से हैं अशोक आश्रम और वहांके वासी पं० धर्मदेव शास्त्री और अुनकी सहधर्मिणी। अिस दम्पतिने कालसीके पहाड़ी प्रदेश और जंगलमें सर्वत्र मंगल करनेकी ठानी है। अुनकी अद्भुत सेवाओंकी सुगंध छिपाये नहीं छिप सकती। अुत्तर प्रदेशमें शराबखोरी बहुत है। फिर पहाड़ोंमें तो और भी ज्यादा। परन्तु अशोक आश्रमके अिर्द-गिर्द दो-ढाअी मीलके हिस्सेमें शराब बन्द है; अशोक आश्रमके अिर्दगिर्द चार-पांच मीलके हिस्सेमें तीन हजार मुस्लिम लोग हैं; अिनमें पच्चीस फी सदी भाअियोंने मांसाहार त्याग दिया है और गोमांस तो कोअी नहीं खाता। नजदीक ही जीवनगढ़ है। वह तो पूरा मुसलमानोंका अिलाका है। वे लोग गूजर मुसलमान कहलाते हैं। गूजर यानी गोचर। गायोंको चरानेवाले। देशके बंटवारेके समय यहां भी कुछ धांधली मची थी, जिसमें मुसलमानोंकी दो सौ अस्सी भैंसें लापता हो गयी थीं। धर्मदेवजीने अपने साथियोंकी मददसे अुनमें से दो सौ वापस दिलवायीं।

अशोक-आश्रमसे तीन मील पर अशोकका शिलालेख है। पश्चिममें जौंनसार, अुत्तरमें बिसार, टेहरी और मसूरी, दक्षिणमें रुद्रपुर। जमुनाजीका पाट यहां तीन फर्लांग चौड़ा है। जमनोत्री अेक सौ साठ मील पर है। पूरा गांव हरिजनोंका है। चारों तरफ हरिजनोंकी बस्ती है। पहाड़ी जातियोंमें बहुपत्नीत्व, बहुपतित्व दोनों जारी हैं। अुनमें बीस फी सदी अशुद्ध रक्त है। व्यभिचारके कारण यहां फिरंगी रोग काफी चल पड़ा है। लेकिन अिसी पहाड़ी प्रदेशकी जोमों स्त्रियां हैं, जो बहुत चरित्रवान हैं और लामासे दीक्षा लेती हैं। अैसा यह विस्तृत और अद्भुत क्षेत्र धर्मदेवजीका सेवाक्षेत्र बना हुआ है। अिन सब लोगोंने भूदान-आन्दोलनमें दिलचस्पी ली। अपने बसकी थोड़ी-थोड़ी जमीन भी दी। नेपालसे भी लोग यहां जमीन देने आये। देहरादूनमें जमीन कम है। अिसलिअे जहां और जिलोंको विनोबाजीने दस-दस हजारका कोटा सौंपा है, वहां देहरादूनको साढ़े तीन हजारका ही सौंपा है।

कालसी आश्रमसे करीब सवा दो सौ मील पर भारत और तिब्बतकी सरहद है। अब तक यहां जमीनका लगान तिब्बतवाले वसूल करते थे। धर्मदेवजीने भारत सरकारका ध्यान अिस ओर आकर्षित किया और अब वह लगान भारत सरकार वसूल करती है। अब तक वहां कोअी जिम्मेदार भारतीय पहुंचा नहीं था।

अिस दृष्टिसे धर्मदेवजीका कालसीमें आकर बसना और आश्रमकी नींव डालना भारतीय अितिहासमें अेक महत्त्वपूर्ण घटना है।

सिर्फ अेक और घटनाका जिक्र करके यह लेख समाप्त करता हूं। ऋषिकेशमें गंगाके किनारे विनोबाजीका सबेरे और शाम अद्‌भुत व्याख्यान हुआ। वे जहां व्याख्यानके लिअे बैठे थे, वहां अुनके बिलकुल पाससे गंगाकी धारा बह रही थी। पर लोगोंने देखा कि विनोबाके नयनोंसे भी धारा बह रही है। ब्रह्मविद्या पर अुनका अुस दिन अत्यंत सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुआ।

शामको काली-कमलीवाले महाराजके मठके अनेक संतपुरुष विनोबाजीसे मिलने आये। दूसरे रोज हरिद्वारके रास्ते अुनकी अेक धर्मशालामें विनोबा अुन साधुवृंदोंके आग्रहके कारण थोड़ी देर रुके। सबेरेका कलेवा वहीं किया। साधुवृंदोंने हार्दिक स्वागत किया और प्रसादीके रूपमें रुद्राक्षकी माला और अेक छोटी झारीमें गंगोत्रीका प्रसाद भेंट किया। बापूजीका स्मरण भी अुन लोगोंने दिलाया। सबके हृदय भर आये। गंगामाअीका प्रसाद लेकर हम लोग कृतज्ञ भावनासे आगे बढ़े।

अेक रोज सबेरे मैंने विनोबाकी मधुर वाणीसे सुना:

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कंद विनायक सविता पावक तू।
ब्रह्म मज्द तू, यहव शक्ति तू, अीशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानंद हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू।

यह है अुस प्रसादकी प्रसादी!

दा० मूं०

योजना-कमीशनसे

सब कोअी जानते हैं कि सरकारें अपना शराबबन्दीका वचन पालनेमें क्यों आगा-पीछा कर रही हैं। अिसका मुख्य कारण आर्थिक है — वे आबकारीसे होनेवाली आसान आमदनीको खोनेके लिअे तैयार नहीं हैं। हम मानते हैं कि अिस आमदनीका अेकाअेक होनेवाला नुकसान शासकों या अर्थमंत्रीके लिअे सिरदर्द और चिन्ताका कारण बन सकता है। अिसलिअे यह जरूरी हो सकता है कि सरकारी आमदनीकी कटौतीको धीरे धीरे बढ़ाया जाय। लेकिन अिस दलीलका यह मतलब तो नहीं कि हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और अिस दिशामें अेक कदम भी आगे नहीं बढ़ें। लेकिन असल मुद्दा तो अिससे भी ज्यादा गंभीर और बुनियादी है — क्या अैसी आमदनी अिकट्ठी करना कुशल राजनीतिज्ञता और सच्ची अर्थनीति है? यहां हरमेन लेवीकी पुस्तक 'ड्रिन्क' (शराब) में से नीचेका हिस्सा देनेके लिअे मुझे क्षमा किया जाय। शराबसे होनेवाली सरकारी आयके अिस पहलूकी चर्चा करते हुअे वह कहता है:

> "शराब हमेशा सरकारी आयका अेक सबसे प्रिय साधन थी और आज भी है। . . . फिर भी अिसमें बड़ा शक है कि बरबादीभरे खर्चको — जिस पर अूंचे करका बहुत बड़ा बोझ भी नहीं पड़ता — स्थायी अुत्तेजन देनेवाले जरियोंसे बहुत बड़ी आमदनी करनेकी नीति सच्ची अर्थनीतिके बुनियादी सिद्धान्तोंके साथ मेल खानेवाली कही जा सकती है या नहीं।" (पृष्ठ १०२)

मुझे आशा है कि योजना-कमीशन, जो न सिर्फ आर्थिक कमीशन है, बल्कि राष्ट्रके कल्याण, स्वस्थ जीवन और समृद्धिके लिअे योजना बनानेका दावा करता है, सवालके अिस पहलू पर विचार करेगा और अैसी क्रमिक योजना बनायेगा, जिससे अगले दो या तीन बरसोंमें सारे देशमें शराबबन्दी लागू की जा सके। राष्ट्रपिताके ऋणसे मुक्त होनेके लिअे कमसे कम अितना तो हम सबको करना ही चाहिये।

१५-४-'५२
(अंग्रेजीसे)

मगनभाअी देसाअी

बन्दरोंका अुपद्रव

बन्दरोंसे खेतीको बहुत नुकसान पहुंचता है, अुनका क्या किया जाय, यह प्रश्न बार-बार पूछा जाता है। जहां विनोबाजीका आश्रम है, अुस पवनारमें भी अब यह मुश्किल खड़ी हुअी है। आश्रमके वयोवृद्ध श्री कोटी बाबा लिखते हैं:

> "परधाममें बानरसे फसलका संरक्षण अहिंसक मार्गसे कैसा किया जाय? यहांके व्यवस्थापक जिला अधिकारीके पास गये थे। वे अुनके नाशमें मदद करनेके लिअे तैयार हैं। परंतु यह समस्या अहिंसक तरीकेसे कैसे हल की जाय?"

अिस विषय पर मैं पहले लिख चुका हूं। गांधीजीने भी लिखा है। छोटे जीवोंकी हिंसा भी अहिंसाधर्मीको या दयावृत्ति रखनेवाले मनुष्यको सहन नहीं होती। वह मुझे कैसे अच्छी लग सकती है? लेकिन मजबूरन कहना पड़ता है कि फिलहाल तो मनुष्यके पास अिन प्राणियोंके नाशके सिवा दूसरा मार्ग नहीं। मानव-समाजके लिअे खेती वगैरा किये बिना जिन्दा रहना संभव नहीं। तब खेतीकी रक्षा भी करनी ही होगी। अुसके पीछे दूसरे प्रतिस्पर्धी जीवोंकी हिंसा आती ही है। बंदर, हरिन, सूअर, वन-गाय, अुजाड़ू गाय, हाथी वगैराका अुपद्रव मिटाना ही होगा। अिनमें से सिर्फ अुजाड़ू गायोंको पकड़ा और पाला जा सकता है, और अुनसे दूध और काम लिया जा सकता है। औरोंका नाश ही करना पड़ेगा। जब बड़े प्राणियोंके विषयमें यह कहना पड़ता है, तब टिड्डी-दल तथा तरह-तरहके कीड़ों, मक्खियों और छोटे जंतुओंका तो कहना ही क्या? जो अितनी कठोरता नहीं कर सकता, वह भले ही खुद अिस हिंसा कर्मसे दूर रहकर अपने मनमें संतोष मान ले, लेकिन अुसका विरोध करना अुसके लिअे ठीक नहीं।

जब कि वह मानव-समाजके बीचमें ही रहता है, और मानवकी मेहनतसे पैदा किये हुअे सामान पर अपना गुजारा करता है, वह अैसा गर्व न करे कि अिस हिंसामें अुसका हिस्सा नहीं। वैसा समझना और कहना मिथ्याभिमान और मिथ्यावचन है। अगर अुसमें शक्ति, बुद्धि और तप है, तो वह अैसे अुपाय ढूंढ़े, जिससे मानव-समाज बगैर खेती वगैरा किये, या बिना परिग्रह रखे अपना गुजारा कर सके।

जिनमें जरूरत होने पर आवश्यक कठोरता करनेकी ताकत है, अुन्हें अिन प्राणियोंका अुपद्रव मिटानेमें अपना सहयोग देना चाहिये। हमारे खेत या गांवसे सिर्फ अुन्हें भगा देना ही काफी नहीं होगा।

वर्धा, ४-४-'५२

कि० घ० मशरूवाला

बालपोथी

लेखक: **गांधीजी**

अनुवादक: **काशिनाथ त्रिवेदी**

यह बालपोथी गांधीजीने यरवड़ा जेलमें लिखी थी। अिसमें अुन्होंने शिक्षा-पद्धतिमें बहुत ही बड़ी क्रान्ति सूचित की है। समूचे देशके शिक्षा-शास्त्री अिस पर सोच सकें, अिस हेतुसे मूल गुजरातीका यह हिन्दी संस्करण प्रकाशित किया गया है।

की० ०-३-०
डाकखर्च ०-१-६

विषय-सूची

		पृष्ठ
हिन्दुस्तानी गवर्नर	गांधीजी	७३
शराबबन्दीकी टीकाका जवाब	गांधीजी	७३
कांग्रेसके लिअे अेक कठिन सवाल	मगनभाअी देसाअी	७४
बड़ी बनाम छोटी योजनाअें	कि० घ० मशरूवाला	७६
विनोबाकी अुत्तर प्रदेश यात्रा — २	दा० मूं०	७७
योजना-कमीशनसे	मगनभाअी देसाअी	८०
बन्दरोंका अुपद्रव	कि० घ० मशरूवाला	८०
टिप्पणी:		
राजस्थानकी अगुआअी	कि० घ० म०	७७